02 जुलाई, 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 7
जुलाई (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मंगल आमंत्रण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा अपूर्व अवसर

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में आयोजित होने जा रहा है

45वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से रविवार 07 अगस्त 2022 तक)

विद्वत्समागम : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा आदि अनेक विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यानों का लाभ मिलेगा

नोट - शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल पर किया जाएगा।

शिविर की विस्तृत आगामी अंक में प्रकाशित की जायगी।

अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा...

अमेरिका व कनाडा के विविध क्षेत्रों में धर्मप्रभावना

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) के तत्त्वावधान में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा हो रही तत्त्वप्रभावना के अन्तर्गत **टोरंटो** (कनाडा) व **ह्यूस्टन** (अमेरिका) के समाचार गत अंक में दिए जा चुके हैं, इनके अतिरिक्त -

1) डलास (अमेरिका) : यहाँ जैन सोसाइटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 20 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा प्रतिदिन तीन समय प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधनी), तत्पश्चात् संयमप्रकाश एवं रात्रि में कालचक्र विषय पर हुए प्रवचनों का आशातीत साधर्मियों ने लाभ लिया। (शेष पृष्ठ 8 पर...)

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित...

'भरत के अन्तर्द्वन्द्व' के मंचन हेतु

पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व दिनांक 31 अगस्त से 09 सितम्बर 2022 सम्पन्न होने जा रहे हैं। इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल लिखित बहुचर्चित नाटक **भरत के अंतर्द्वन्द्व** का अपने नगर में मंचन कराएँ। इस महान कृति में चक्रवर्ती भरत के सर्वांगीण व्यक्तित्व को बहुत ही कुशलता के साथ दर्शाया गया है।

यदि आप अपने स्थान पर इसका मंचन कराना चाहते हैं तो नाटक की स्क्रिप्ट एवं वीडियो उपलब्ध करा दी जाएगी। नाटक के निर्देशन एवं इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार की सहायता हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर तत्पर रहेगा।

सम्पर्क करें - पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री - 9079061701

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

बंधतत्त्व सम्बन्धी अन्यथा श्रद्धान...

अशुभ भावों से पाप बंध होता है, उससे नरकादि गति मिलती है - ऐसा जानकर उन्हें बुरा मानता है और शुभ भावों से पुण्य बंध होगा, उससे स्वर्गादि गति मिलेगी - ऐसा जानकर उन्हें भला मानता है; लेकिन पण्डितजी कहते हैं कि भैया इन शुभ-अशुभ भावों से जो पुण्य-पाप हुए उनका बटवारा तो मात्र अघातिकर्मों में ही होता है। दोनों ही भावों से घातिकर्म तो निरन्तर ही बंध रहे हैं, जोकि पापरूप ही हैं। इनका बंध तो शुभ भावों से भी निरन्तर होता ही रहता है। इसलिए अशुभ को बुरा और शुभ को भला मानना बंधतत्त्व संबंधी भूल है।

संवरतत्त्व सम्बन्धी अन्यथा श्रद्धान...

अहिंसादि रूप शुभ भावों को संवर जानता है; लेकिन इस भाव से तो पुण्य बंधता है। एक ही भाव से बंध व संवर - यह दोनों कार्य कैसे हो जाएंगे? अर्थात् एक ही परिणाम बंधन का कारण भी हो और बंधन के अभाव का कारण भी हो - ऐसा कैसे हो सकता है? जैसे - गाड़ी को रोकने के लिए ब्रेक होता है और चलाने के लिए एक्सीलेटर। ब्रेक दबाने से ही गाड़ी चलने भी लगे और रुक भी जाए - ये दोनों काम एक ही से नहीं हो सकते।

यहाँ कोई कहे कि मुनिराजों के एक भाव से एक काल में ही पुण्य बंध भी होता है और संवर-निर्जरा भी होती है? पण्डितजी उनसे कहते हैं कि उनके जीवन में मिश्ररूप भाव है। वे कुछ अंशों में वीतरागी हैं और कुछ अंश में सरागी हैं। जितने अंशों में वीतरागभाव हैं, उतने में संवर-निर्जरा है और जितने अंशों में राग भाव है, उतने में आस्रव-बंध है - इसप्रकार एक काल में दोनों कार्य हुए; परन्तु एक राग भाव से ही पुण्य बंध भी मानना और संवर-निर्जरा भी मानना तो भ्रम है।

शास्त्रों में गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परिषहजय एवं चारित्र को संवर का कारण कहा है, इनके यथार्थ स्वरूप को नहीं समझता।

गुप्ति : बाह्य में मन-वचन-काय की चेष्टा को रोकने, पाप का चिंतन नहीं करने, मौनादि धारण करने, शरीरादि को स्थिर करने को गुप्ति समझता है और इसके लिए अनेक उपाय भी करता है। टोडरमलजी कहते हैं कि यह चेष्टा तो तूने जबरन रोकी हैं, वीतराग भाव होने पर मन-वचन-काय की चेष्टा का स्वयं ही रुक जाना सच्ची गुप्ति है।

समिति : परजीवों की रक्षा के लिए होने वाली यत्नाचाररूप प्रवृत्ति को समिति मानता है, चार हाथ जमीन देखकर चलने, हित-मित-प्रिय वचन बोलने को ईर्या-भाषा समिति समझता है। पण्डितजी कहते है कि ये सब तो जड़ की क्रियाएँ हैं। सच्चा संवर तो वीतराग भाव से होता है। बहुत ही गजब का तर्क देते हैं कि यदि हिंसा के परिणाम से पाप बंध और रक्षा के परिणाम से संवर मानोगे तो पुण्य बंध का कारण क्या ठहरेगा?

धर्म : बंधनादि के भय से अथवा स्वर्ग-मोक्ष की इच्छा से क्रोधादि नहीं करता हुआ स्वयं को धर्मी मानता है। पण्डितजी कहते हैं कि यहाँ क्रोध का अभिप्राय तो मिटा ही नहीं। जैसे - कोई राजादिक के भय से या महानता के लोभ से परस्त्री का सेवन न करतो उसे त्यागी नहीं कहते। वैसे ही इसे क्रोध का त्यागी कैसे कहें?पदार्थ इष्ट-अनिष्ट भासित होने से क्रोधादिक होते हैं और तत्त्वज्ञान के अभ्यास से कोई पदार्थ इष्ट-अनिष्ट भासित न हो तब स्वयं ही क्रोधादि उत्पन्न नहीं होते और सच्चा धर्म प्रकट होता है।

अनुप्रेक्षा : अनित्यतादि के विचार से शरीरादि को बुरा जानता है, किन्तु यह तो द्वेषरूप उदासीनता है। वास्तव में तो जैसा स्वभाव है वैसा पहिचाने, भला जानकर राग न करें और बुरा जानकर द्वेष न करें - ऐसी उदासीनता ही सच्ची अनुप्रेक्षा है।

परिषहजय : बाह्य में क्षुधादि होने पर उनके नाश का उपाय नहीं करता और अन्तरंग में दुःख सहित होकर भी परिषहजय मानता है। पण्डितजी उससे कहते हैं कि यह तो आर्त-रौद्रध्यान रूप परिणाम हैं। बाह्य परिस्थितियों को ज्ञेय मात्र जानना ही सच्चा परिषहजय है।

चारित्र : हिंसादि का त्याग कर तथा महाव्रत-अणुव्रतादि अंगीकार कर स्वयं को चारित्रवन्त समझता है। टोडरमलजी कहते हैं कि यह अणुव्रत और महाव्रत के परिणाम तो आस्रवरूप हैं। उमास्वामी आचार्य ने तत्त्वार्थसूत्र के सातवें अध्याय में आस्रवतत्त्व की चर्चा करते हुए अणुव्रत और महाव्रत को भी शामिल किया है। इसलिए सकल कषाय रहित उदासीन परिणाम अथवा वीतरागभाव ही सच्चा चारित्र है।

यहाँ कोई कहे कि मुनिराज भी तो तीव्र कषाय के नाश के अर्थ मन्दकषायरूप महाव्रतादि का पालन करते हैं? पण्डितजी उससे कहते हैं कि महामुनिराज महाव्रत अंगीकार तो करते हैं; परन्तु इस मन्द कषायरूप भाव को मोक्षमार्ग नहीं मानते।

निर्जरा तत्त्व का अन्यथारूप....

अनशन–उपवासादि तप से निर्जरा मानता है। उससे कहते हैं कि केवल बाह्य तप से निर्जरा नहीं होती। तप का मूल प्रयोजन तो शुद्धोपयोग की वृद्धि करना है; लेकिन तू तो दुख और कष्ट सहने को ही तपस्या समझता है। हाथ ऊपर करके, एक पैर पर खड़ा होकर, भूखा रहकर कष्ट सहता है। यदि इसी का नाम तप हो तो तिर्यंचादि भी भूख–प्यास सहन करते हैं, उन्हें भी निर्जरा मानो।

यहाँ कोई कहे कि तिर्यंचादि तो पराधीनता से सहन करते हैं, स्वाधीनता से धर्मबुद्धिपूर्वक उपवासादि करें तब निर्जरा होती है। टोडरमलजी कहते हैं कि बात तो तेरी सच्ची है, भले ही धर्मबुद्धि से उपवास किए हों; परन्तु फल तो परिणामों का लगेगा। यदि थोड़े उपवास से थोड़ी और बहुत उपवास से बहुत निर्जरा होवे तो उपवासादि ही निर्जरा का कारण हो जाये।

यहाँ कोई कहे कि तत्त्वार्थसूत्र में तो**तपसा निर्जरा च** अर्थात् तप से निर्जरा होती है – ऐसा कहा है।पण्डितजी कहते हैं कि तूने कहा कि तप से निर्जरा होती है, सो ठीक; परन्तु शास्त्रों में**इच्छानिरोधस्तप:** अर्थात् इच्छा के निरोध को तप कहा है जब इच्छा रुकती है, तब उपयोग अन्दर में जाता है और शुद्धोपयोगरूप सच्चा धर्म प्रकट होता है, इसलिए तप से निर्जरा होती है – ऐसा कहा जाता है।

कोई कहे कि ज्ञानी जीव भी तो उपवासादि करते हैं? उससे कहते हैं कि ज्ञानी जीव तो शुद्धोपयोग बढ़ाने के लिए उपवासादि करते हैं। वहाँ उपवासादि की इच्छा नहीं है, एकमात्र शुद्धोपयोग की इच्छा है। यदि परिणामों की शिथिलता होती जाने तो आहारादि भी ग्रहण करते हैं, उन्हे उपवास करने का हटाग्रह नहीं होता।

यदि ऐसा है तो अनशन को तप क्यों कहा? उससे कहते हैं कि बाह्य से औरों को तपस्वी दिखाई दे, इसलिए इन्हें बाह्य तप कहा है। वास्तव में तो जैसे अंतरंग में परिणाम होंगे, वैसा फल लगेगा।

यहाँ कोई स्वच्छंदी कहे कि यदि ऐसा है तो हम उपवासादि नहीं करेंगे। उससे कहते हैं कि उपदेश तो हमेशा ऊँचा चढ़ने को दिया जाता है। हम तो यहाँ यह कह रहे हैं कि उपवास तो करो; लेकिन साथ में विषय–कषाय का भी त्याग करो।

तथा अन्तरंग तपों में भी दो माला फेरने मात्र से प्रायश्चित मान लेता है, किसी के सामने माथा टेक लेने को विनय मानता है, दूसरों की सेवा या हाथ–पैर दबाने को वैयावृत्ति समझता है, किसी भी ग्रंथ को उठाकर पढ़ लेने से स्वाध्याय हो गया मानता है और ध्यान के नाम पर एक स्थान पर बैठ जाता है – इसप्रकार अन्तरंग तप भी बाह्य तप जैसा ही पालता है। इनका भी यथार्थ स्वरूप नहीं समझता।

पण्डितजी ने बहुत सुन्दर तर्क देते हुए निर्जरा के असली स्वरूप को स्पष्ट किया है –

देखो! चतुर्थ गुणस्थान वाला शास्त्राभ्यास, आत्मचिंतन आदि कार्य करें – वहाँ पर निर्जरा नहीं होती और बंध भी बहुत होता है और पंचम गुणस्थान वाला विषय–सेवनादि कार्य करें – वहाँ भी उसके गुणश्रेणी निर्जरा होती है और बंध भी थोड़ा होता है तथा पंचम गुणस्थान वाला उपवासादि तप करें उस काल में भी उसके निर्जरा थोड़ी होती है और छठे गुणस्थान वाला आहार–विहारादि करें उस काल में भी उसके निर्जरा बहुत होती है तथा बंध उससे भी थोड़ा होता है।

इसलिए निष्कर्ष रूप कहा कि बाह्य प्रवृत्ति के अनुसार निर्जरा नहीं है। अंतरंग कषाय शक्ति घटने से विशुद्धता होने पर निर्जरा होती है।

इसप्रकार अनशनादि क्रिया की तप संज्ञा उपचार से जानना। जैसे धन को व अन्न को प्राण कहा जाता है – ऐसा समझकर यदि कोई व्यक्ति अन्न व धन को इकट्ठा करता जाए और समझे कि मेरी आयु/प्राण बढ़ रहे हैं तो वह मूर्ख है। अन्न को प्राण इसलिए कहा; क्योंकि उसके सेवन से शक्ति बनी रहती है। उसीप्रकार शास्त्रों में उपवासादि को निर्जरा का कारण कहा – ऐसा मानकर उपवास ही उपवास करता जाए तो मूर्ख है। उपवास को तप इसलिए कहा; क्योंकि इससे शुद्धोपयोग/वीतरागभाव का पोषण होता है।

मोक्षतत्त्व का अन्यथारूप....

यह जीव ऐसा मानता है कि स्वर्ग से अनंतगुणा सुख मोक्ष में है। इसप्रकार स्वर्ग और मोक्ष के सुख की एक ही जाति मानता है; परन्तु स्वर्ग में तो इन्द्रियसुख है और मोक्ष में अतीन्द्रियसुख है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो इन्द्रादिक से अनंतगुणा सुख सिद्धों के कहा है। उससे कहते हैं, जैसे तीर्थंकर के शरीर की प्रभा को सूर्य की प्रभा से अनंतगुणा अधिक कहने पर उनकी एक जाति नहीं है; परन्तु लोक में सूर्यप्रभा की महिमा बहुत है, उससे भी अधिक महिमा बताने के लिए ऐसा कथन करते है। उसीप्रकार सिद्धों के सुख को इंद्रादिक के सुख से अनंतगुणा कहने पर उनकी एक जाति नहीं है; परन्तु लोक में इंद्रादिक के सुख की महिमा है, उससे भी अधिक महिमा बतलाने के लिए ऐसा कथन किया।

इस प्रकार सिद्धों के सुख और इन्द्रियजन्य सुख की एक जाति जानना मोक्षतत्त्व संबंधी महाभूल है। **(क्रमश:)**

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व सम्बन्धित विशेष सूचना

संयम की साधना, सिद्धों की आराधना, निजात्मा की प्रभावना के कारणभूत पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व दिनांक 31 अगस्त से 09 सितम्बर 2022 सम्पन्न होने जा रहे हैं।

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ स्वीकृति भेजें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों/ विदुषियों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में प्रभावनार्थ जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र प्रदान करें।

आप अपनी स्वीकृति जयपुर कार्यालय में पत्र / फोन / ई–मेल / व्हाट्सएप आदि किसी भी माध्यम से भेजे सकतें हैं। यद्यपि सभी विद्वानों को दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, जयपुर द्वारा अनुरोध पत्र भेजे जा चुके हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से पत्र समय पर प्राप्त न हुए हो तो आप स्वयमेव ही अपनी स्वीकृति अतिशीघ्र हम तक पहुँचाने का कष्ट करें।

– कार्यकारी महामंत्री

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर अपने नगर में विधान/ प्रवचनार्थ विद्वानों को आमंत्रित करने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को आमंत्रण–पत्र समाज / मंदिर / संस्था के लेटरहेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते विद्वान की उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता लिखें – नाम, स्थान, मोबाइल या फोन नं. (एस. टी. डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल सम्पर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

विशेष अनुरोध – अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से अनुरोध है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें।

सम्पर्क सूत्र – दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए–४, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015
मोबाइल नं. – 9785649333 (डॉ. शान्तिकुमार पाटील)
फोन नं. – 0141–2705581, 2707458,
E-Mail : Ptstjaipur67@gmail.com

चौदह दिवसीय जैन लिटरेचर फेस्टिवल

आगरा (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान स्मृति सभागृह ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 10 से 23 जून 2022 तक ग्रीष्मकालीन अवकाश में आयोजित चौदह दिवसीय जैन लिटरेचर फेस्टिवल द्वारा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई।

इस फेस्टिवल में बच्चों एवं युवाओं को प्रात: जिनेन्द्र प्रक्षाल–पूजन के पश्चात् स्पेशल जैन टॉक्स नामक परिचर्चा द्वारा, दोपहर व सायंकाल में जिनागम के विविध रोचक विषयों पर आयोजित सेमिनारों द्वारा एवं रात्रि में समयसार संगीत नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा जैन धर्म के प्राचीन साहित्य एवं संस्कृति के अनेक विषयों से विशेषरूप से परिचित कराया गया।

अंतिम दिन चैतन्य विलास पाठशाला के बालक–बालिकाओं द्वारा समयसार तत्त्वचर्चा नामक अद्भुत नाट्य प्रस्तुति दी गई। समारोह में पण्डित निलयजी शास्त्री एवं पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा के सान्निध्य में परीक्षा परिणाम एवं अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ।

इस फेस्टिवल के निर्देशक एवं संचालक पण्डित पवित्रजी शास्त्री एवं विशेष सहयोगी पण्डित पुष्पजी शास्त्री रहे।

वैराग्य समाचार

1) जयपुर निवासी श्रीमती मालतीलताजी धर्मपत्नी स्व. श्री नथमलजी झांझरी का दिनांक 16 जून 2022 को देह–वियोग हो गया। आप एक स्वाध्यायी महिला थीं। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित शिविर में पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करती थीं। मालवीय नगर में आयोजित शिविरों का संचालन भी आपके ही परिवार द्वारा किया जाता है। आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक में 2,100 रूपये एवं एक विद्यार्थी के अध्ययन हेतु 30,000 रूपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

2) नवरंगपुरा निवासी श्री कीर्तिकुमारजी पिताश्री चिमनलालजी शाह (धानियोल) का दिनांक 18 जून 2022 को प्रातःकाल देहावसान हो गया। आप स्वाध्यायी, धर्मप्रेमी एवं धर्म–प्रभावना हेतु समर्पित व्यक्ति थे। ज्ञातव्य है कि आपके पिताश्री पण्डित चिमनलालजी प्रवचनकार थे एवं आपके पुत्र पण्डित ऋषभजी शास्त्री श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक विद्वान हैं। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 5,000 रूपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त हों – यही कामना है।

17वाँ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

हिंगोली : यहाँ श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 17वाँ बाल संस्कार शिविर एवं कल्पद्रुम महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

29 मई से 05 जून 2022 तक आयोजित इस 17वें बाल संस्कार शिविर में विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, सह–विधानाचार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं बाल संस्कार शिविर की कक्षाओं के संचालन में पण्डित संजयजी शास्त्री, पण्डित अनुरागजी शास्त्री, पण्डित शशांकजी शास्त्री, पण्डित ध्रुवजी शास्त्री, पण्डित प्रिंसजी शास्त्री, पण्डित संयमजी शास्त्री, पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अजयजी शास्त्री एवं पण्डित पंकजजी शास्त्री का भरपूर लाभ मिला।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अक्षयजी दोडल थे। 08 दिवसीय इस शिविर में लगभग 200 विद्यार्थियों एवं 500 साधर्मियों ने कल्पद्रुम महामण्डल विधान का लाभ लिया। बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्धमान, महावीर तथा युवा वर्ग – इसप्रकार विभिन्न कक्षाओं का संचालन किया गया। प्रतिदिन अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बालकों में जैन धर्म के संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

यह शिविर विगत 16 वर्षों से आयोजित किया जा रहा है, जिसके मार्गदर्शक पण्डित फूलचंदजी मुक्कीरवार एवं पण्डित अमोलजी सिंघई हैं। कार्यक्रम की सफलता में मंदिर के अध्यक्ष श्रीमान मिलिंदजी यंबल एवं संपूर्ण कार्यकर्तागण व महिला मण्डल का सहयोग उल्लेखनीय है।

ललितपुर में सम्पन्न आध्यात्मिक शिविर

ललितपुर : यहाँ श्री शीतलनाथ जिनालय में 13 से 19 जून 2022 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

दैनिक कार्यक्रम में प्रातः जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् समयसार विषय पर प्रवचन, दोपहर में परीक्षामुख विषय पर कक्षा एवं रात्रि में प्रवचनसार ग्रन्थ पर व्याख्यान का लाभ मिला।

साथ ही 19 जून को चार अनुयोग : एक सिंहावलोकन विषय पर सैद्धान्तिक गोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम के आयोजन में पण्डित आप्तजी शास्त्री, दमोह व पण्डित सक्षमजी शास्त्री, ललितपुर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित भानुकुमारजी शास्त्री, श्री मांतजी जैन, ब्र. कमलश्री बेन के निर्देशन में सम्पन्न हुए। पण्डित अर्पितजी शास्त्री व पण्डित प्रीतिंकरजी शास्त्री का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

शास्त्री स्नातक सम्मेलन सम्पन्न

बाँसवाड़ा (राज.) : तीर्थधाम ध्रुवधाम के प्रांगण में वागड़ क्षेत्र के समस्त स्नातकों के सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं श्री आचार्य अकलंक जैन न्याय महाविद्यालय, बाँसवाड़ा के लगभग 45 शास्त्री विद्वानों स्नातकों का मिलन हुआ, जिसका उद्देश्य तत्त्वप्रचार की गतिविधियों को बढ़ावा देना था।

दिनांक 19 जून 2022 को प्रातः जिनेन्द्र–प्रक्षाल व पूजन के पश्चात् आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की मंगलदेशना से सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ।

प्रथम सत्र में श्री महीपालजी ज्ञायक, डॉ. संजयकुमारजी शाह एवं श्री प्रमोदकुमारजी जैन मंचासीन थे। स्नातकों ने अपना परिचय देते हुए स्नातक सम्मेलन पर प्रसन्नता व्यक्त की। सत्र का मंगलाचरण श्री सचिनजी बरा ने एवं आभार–प्रदर्शन श्री संदीपजी जैन ने किया। **द्वितीय सत्र** का शुभारम्भ श्री अश्विनजी नानावटी एवं श्री राकेशजी दोशी के संयुक्त मंगलाचरण से हुआ। इस सत्र में सम्मेलन की आवश्यकता एवं महत्त्व पर चर्चा की गयी। इस सम्मेलन में श्री मनोजकुमारजी शाह के सौजन्य से तत्त्वप्रचार की गतिविधियों की निरन्तरता हेतु अगस्त माह में एक दिवसीय विधान एवं धार्मिक कक्षाओं के आयोजन का निर्णय लिया गया।

श्री महीपालजी ज्ञायक ने अपने उद्बोधन में प्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्नातक परिषद को पूर्ण सहयोग करने की भावना व्यक्त की एवं निरन्तर तत्त्वप्रचार की गतिविधियों को संचालित करने की प्रेरणा दी। आयोजन में श्री मुकेशजी ज्ञायक एवं पण्डित सतीशजी जैन का अविस्मरणीय सहयोग प्राप्त हुआ।

कोलकाता में कीर्तिस्तम्भ स्थापित

कोलकाता : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर कीर्तिस्तम्भ स्थापना एवं श्री लघु समयसार महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। कीर्तिस्तम्भ स्थापनकर्ता श्रीमती रमाबेन नगीनदास भायाणी परिवार, कोलकाता थे। विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर रहे।

18 जून 2022 को रात्रि में भजन संध्या एवं कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द की संगीतमय कथा का आयोजन किया गया। 19 जून 2022 को प्रातः लघु समयसार विधान, गुरुदेवश्री के विशिष्ट प्रवचन व पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के व्याख्यान के तत्पश्चात् कीर्तिस्तम्भ उद्घाटन एवं अनावरण समारोह सम्पन्न हुआ।

• पंचम शतक : श्रमण शतक •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(दोहा)

महिमा केवलज्ञान की, जग में अपरंपार।
वह अनन्त आनन्दमय, महके सदाबहार।।52।।

सभी द्रव्य पर्यय सहित, सुगुण अनन्तानन्त।
नित्य असंख्य प्रदेशमय, झलकें उसमें नित्य।।53।।

स्व स्वभाव गुण धर्ममय, शक्ति अनन्तानन्त।
इनको जाने जीव जो, पावे भव का अन्त।।54।।

तीन काल के समय सम इक गुण की पर्याय।
जो जो हों जिस जिस समय, जानें सब जिनराय।।55।।

जो होनी है जिस समय, उसी समय वह होय।
कितनी भी कोशिश करो, टस–से–मस ना होय।।56।।

जिसका है श्रद्धान यह, उसके भव का अन्त।
ऐसी श्रद्धावान के, भव ना होय अनन्त।।57।।

सौ इन्द्रों के सामने, भाषी श्री भगवन्त।
इसमें संशय रंच ना, मान करो भव अन्त।।58।।

यदि चाहो इस भव विषैं, सन्तों जैसी शान्ति।
स्वीकारो इस सत्य को, रखो ना मन में भ्रांति।।59।।

परम सत्य की स्वीकृति, परम सत्य का ज्ञान।
परम सत्य की साधना, परमानन्द महान।।60।।

जो–जो केवलज्ञान में, झलक रहा है नित्य।
उसे जानकर मानकर, दिखलाओ भव्यत्व।।61।।

पर्यय किसकी कब कहाँ, जानें केवलज्ञान।
फेर–फार संभव नहीं, भाषी श्री भगवान।।62।।

भूतकालवत् जानिये, आगामी पर्याय।
भी स्वकाल में होत है, फेर–फार ना थाय।।63।।

अदल–बदल कुछ भी नहीं, ना जल्दी ना देर।
कुछ भी संभव है नहीं, हेर–फेर–अन्धेर।।64।।

जिस गुण में जिस द्रव्य में, जब–जब जो–जो होय।
रे अनादि से अन्त तक, सभी सुनिश्चित होय।।65।।

कोई क्यों बदले अरे, सहज द्रव्य की चाल।
सहज भाव से परिणमन, क्यों न हो स्वीकार।।66।।

द्रव्यों के परिणमन में, हस्तक्षेप का भाव।
अनुचित है अन्याय है, है विभावमय भाव।।67।।

कोई किसी का क्यों करें, क्यों हो ऐसा भाव।
ऐसा हो सकता नहीं, रे–रे वस्तु स्वभाव।।68।।

फेरफार की कल्पना, है आकुलता रूप।
सब जग जाने बात यह, आकुलता दुखरूप।।69।।

जबतक यह बेहोश[1] था, तबतक किया न रंच।
अब जब आया होश[2] में, तब क्यों करे प्रपंच।।70।।

जब से आया होश में, तब से उठें विकल्प।
करूँ बदल दूँ वस्तु को, विकलप उठें अनल्प।।71।।

वस्तु विकल्पातीत है, और विकल्प अनल्प।
इसीलिये ना हो रहा, यह आतम अविकल्प।।72।।

फेर–फार संभव नहीं, पर फेर–फार के भाव।
अरे निरन्तर हो रहे, जिनका आर–न–पार।।73।।

सब विकल्प हैं निरर्थक, रे उनके अनुसार।
वस्तु कभी ना परिणमें, हैं वे सब बेकार।।74।।

पर कर्मों का बंध तो, हो उनके अनुसार।
अतः कहे हैं अनर्थक, अपने लिये हजार।।75।।

1. निगोद से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक
2. सैनी पंचेन्द्रिय हुआ

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला

20

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 171 – इस गाथा में संपूर्ण जिनशासन का जानने वाला किसे कहा है?

उत्तर – जो अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, नियत, अविशेष और असंयुक्त आत्मा को जानता है; वह सम्पूर्ण जिनशासन को जानता है अर्थात् आत्मानुभवी को ही सम्पूर्ण जिनशासन का मर्मज्ञ कहा है।

प्रश्न 172 – जिनशासन को हम कितने रूपों में देखते हैं?

उत्तर – जिनशासन को हम दो रूपों में देखते हैं– द्रव्यश्रुत और भावश्रुत।

प्रश्न 173 – द्रव्यश्रुत किसे कहते हैं?

उत्तर – द्वादशांग जिनवाणी को द्रव्यश्रुत कहते हैं।

प्रश्न 174 – भावश्रुत किसे कहते हैं?

उत्तर – जिनवाणी के प्रतिपाद्य को जानने वाली श्रुतज्ञान पर्याय को भावश्रुत कहते हैं।

प्रश्न 175 – द्रव्यश्रुत और भावश्रुत में क्या अंतर है?

उत्तर – द्रव्यश्रुत अबद्धस्पृष्ट आत्मा के स्वरूप का निरूपण करता है और भावश्रुत अबद्धस्पृष्ट आत्मा का अनुभव करता है।

प्रश्न 176 – शास्त्रों के स्वाध्याय का मूल प्रयोजन क्या है? और क्यों?

उत्तर – शास्त्रों के स्वाध्याय का मूल प्रयोजन तो एकमात्र दृष्टि के विषयभूत निज आत्मा को जानना है; क्योंकि उसके आश्रय से ही सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र रूप मोक्षमार्ग की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न 177 – शास्त्र स्वाध्याय की अनिवार्यता किसे है और किसे नहीं?

उत्तर – जब तक आत्मानुभूति नहीं हो जाती, तब तक सभी को शास्त्र स्वाध्याय करना ही चाहिए। जिन्हें आत्मानुभूति हो जाती है उन्हें यद्यपि शास्त्र स्वाध्याय की अनिवार्यता नहीं है; तथापि उपयोग को अन्यत्र भटकने से बचाने के लिए और उपयोग की विशुद्धि के लिए ज्ञानी भी स्वाध्याय करते हैं।

प्रश्न 178 – सामान्यज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर – शुद्धज्ञान को सामान्यज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 179 – विशेषज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञेयाकार ज्ञान को विशेषज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 180 – ज्ञेयाकार किसे कहते हैं, और क्यों?

उत्तर – ज्ञेयों को जानने वाले ज्ञान को ज्ञेयाकार ज्ञान कहते हैं; क्योंकि ज्ञानपर्याय में उन ज्ञेयों के आकार प्रतिबिम्बित होते हैं।

प्रश्न 181 – सामान्यज्ञान का अविर्भाव कब होता है?

उत्तर – जब कोई ज्ञानी अन्य ज्ञेयकारों के संयोग की रहितता से केवल ज्ञान का अनुभव करता है तो विशेषज्ञान का तिरोभाव और सामान्यज्ञान का आर्विभाव हो जाता है। सामान्यज्ञान के आर्विभाव और विशेषज्ञान के तिरोभाव से ज्ञानमात्र का अनुभव करते हुए ज्ञान आनन्दसहित पर्याय में अनुभव में आता है। यही आत्मानुभूति है। संक्षेप में कहें तो आत्मानुभूति के काल में सामान्यज्ञान, अकेला ज्ञान ज्ञन–ज्ञान का अविर्भाव होता है।

प्रश्न 182 – क्या सामान्यज्ञान का अविर्भाव होना, शुद्धनय का उदय होना, ज्ञानानुभूति और आत्मानुभूति पर्यायवाची हैं?

उत्तर – हाँ है, सामान्यज्ञान का अविर्भाव होना ही शुद्धनय का उदय होना है, ज्ञानानुभूति है, आत्मानुभूति है।

प्रश्न 183 – क्या अनुभव के काल से भिन्न समय में भी सामान्यज्ञान का आविर्भाव हो सकता है?

उत्तर – हाँ, अनुभव के काल से भिन्न समय में सामान्यज्ञान का आविर्भाव हो सकता है। वह धारणा ज्ञान के रूप में तो सदा ही रहता है और स्मृति, प्रत्यभिज्ञान के रूप में कभी रहता है, कभी नहीं रहता है।

प्रश्न 184 – साध्यभाव और साधकभाव में क्या अन्तर है?

उत्तर – अरहंत व सिद्धदशा साध्यभाव है और उसके पूर्व की शुद्धोपयोग दशा साधकभाव है। चौथे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक साधकदशा है तथा अरहंत और सिद्ध साधकदशा है। पर्याय में पूर्णता की प्राप्ति हो जाना साध्यदशा है और आत्मोपलब्धि होना, पूर्णता की ओर जाना होना साधकदशा है। आत्मा में उपयोग का केन्द्रित होना और फिर बाहर आ जाना, फिर अन्दर जाना और फिर बाहर आ जाना – इसप्रकार बार–बार अन्दर आना और बाहर जाना साधकदशा है। तथा शुद्धपयोग में अनन्तकाल तक के लिए समा जाना साध्यदशा है। दूसरी अपेक्षा में चौथे गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक साधकदशा है और सिद्ध अवस्था साध्यदशा है।

प्रश्न 185 – आत्मा की सच्ची उपासना क्या है?

उत्तर – उपभोग का आत्मसम्मुख होना ही आत्मा की सच्ची उपासना है।

प्रश्न 186 – इस गाथा में दर्शन–ज्ञान–चारित्र के सेवन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – दर्शन–ज्ञान–चारित्र की प्रकटता ही दर्शन–ज्ञान–चारित्र का सेवन कहा जाता है, यहि आत्मा की उपासना है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

एक दिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में ही श्री लघु शान्ति विधान का आयोजन भी किया गया।

समस्त कार्यक्रम श्री अतुलभाई खारा के निर्देशन में एवं श्री अमितजी जैन, श्री राजेशजी जैन, पौरांग जैन, प्रतीक जैन, क्षितिज जैन आदि के सहयोग से सम्पन्न हुये।

2) राले-नॉर्थ कैरोलिना : यहाँ समाज के आग्रह पर पधारे डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा दिनांक 21 से 25 जून 2022 तक प्रतिदिन प्रात: संयमप्रकाश एवं अपूर्व अवसर पर दो प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल लघु समयसार/छहढाला की तीन ढालों पर विशेष प्रवचन हुए। एक दिन समयसार पर विशेष प्रवचन का लाभ मिला। समस्त आयोजनों में श्रीमती इंदिराबेन किशोरभाई मेहता, श्री मयूरजी-स्तुतिजी आदि का विशेष सहयोग रहा।

3) अटलांटा : यहाँ 26 जून 2022 को प्रातःकाल विशेष साधर्मियों की उपस्थिति में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के ध्यान विषय पर एक विशिष्ट प्रवचन का लाभ मिला। आयोजन श्री सचिनभाई शाह के सहयोग से संपन्न हुआ।

4) मयामी (फ्लोरिडा) : 26 जून सायंकाल से 30 जून 2022 तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रात: संयमप्रकाश पर प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल समयसार ग्रंथ पर व्याख्यानों एवं शंका समाधान के पश्चात् जिनागम के विविध विषयों के अंतर्गत सहजता जीवन का आधार, पावर ऑफ थिंकिंग, हमारे हाथ में क्या?, भाग्यशाली कौन? पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ साधर्मियों को मिला। कार्यक्रम श्री महेन्द्रभाई शाह के निर्देशन में सम्पन्न हुए। एक दिन श्रीमद् राजचन्द्रजी के जीवन पर बनी फिल्म दिखाई गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाइव प्रसारण डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के यूट्यूब चैनल पर किया गया, जिसके माध्यम से देश-विदेश के हजारों लोगों ने भरपूर लाभ लिया।

दिल्ली के विद्यानन्द सभागृह में डॉ. संजीव गोधा

दिल्ली : यहाँ कालकाजी स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर के आचार्य विद्यानन्द निलय सभागार में 02 जून 2022 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के ध्यान का वास्तविक स्वरूप विषय पर मार्मिक व्याख्यान सम्पन्न हुआ।

आयोजनकर्ता अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चक्रेशजी जैन, महामंत्री श्री अनिलजी पारसदासजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री ए.के. जैन एवं श्री सुशीलजी सेठी थे।

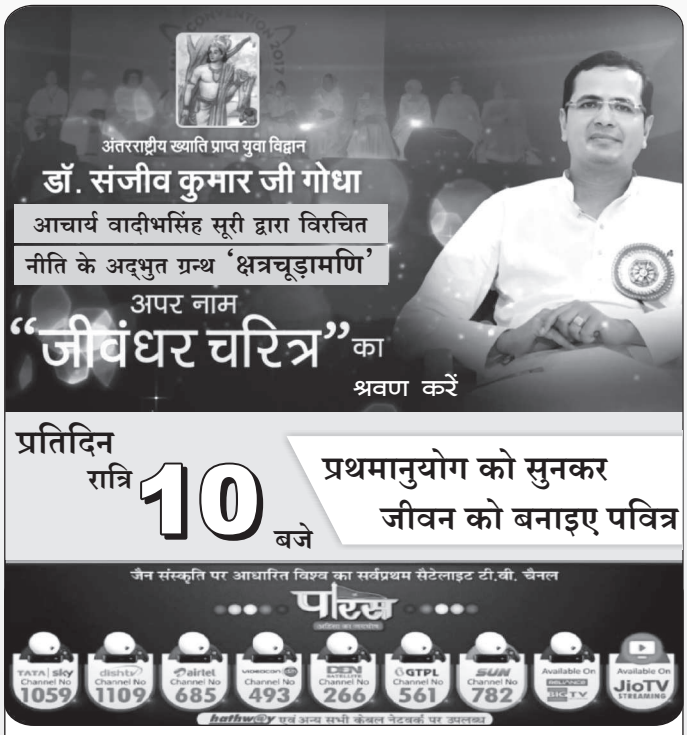

ज्ञातव्य है कि पिछले 1 वर्ष में अब तक साधर्मियों के सहयोग से प्रसारित मेरी भावना, छहढाला एवं पुरूषार्थसिद्धि उपाय पर लगभग 350 प्रवचनों का प्रसारण हुआ, जिसका लाखों साधर्मियों ने लाभ लिया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन**द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2022

प्रति,